कर्मयोग से कर देंगे हम कालचक्र परिवर्तन

लाल किला की प्राचीर से गूंजा अमृतकाल का प्रथम प्रण प्रेरित करता है कि हम एक ऐसे राष्ट्र व व्यवस्था का निर्माण करें जो भारत को विश्व गुरु बनाए। इस बहुत बड़े संकल्प को सिद्ध करने के लिए नवोन्मेष और सृजन के रूप में प्रत्येक नागरिक की सहभागिता आवश्यक है। प्रो. आलोक राय का आलेख..

कोलाज: वीरेंद्र रस्तोगी

स्वाधीन भारत के अमृतकाल में स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उद्बोधन एवं राष्ट्र के सभी नागरिकों से पांच प्रण का आह्वान भारतीय जनतंत्र के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा। प्रधानमंत्री ने पुनः यह विश्वास दिलाया है कि सबका प्रयास ही सबके विकास का मंत्र है। यह दायित्वबोध और आत्मबल की प्रेरणा ही भारत को एक जीवंत, उन्नत, प्रगतिशील तथा नेतृत्वदायिनी भूमिका में स्थापित करेंगे। हमें अपनी गौरवशाली विरासत, एकता, नागरिकता के मूल्यों से पूर्ण एवं गुलाम मानसिकता से पूर्णतया विमुक्त संकल्प लेकर बढ़ना है। विश्वदृष्टा, आदर्शोन्मुखी एवं समेकित योजना में विश्वास करने वाले नायक के रूप में प्रधानमंत्री मोदी ने रेखांकित किया है कि भूमंडलीय चेतना के साथ राष्ट्रीय विकास का प्रयास करना आवश्यक है। विराट की यह संकल्पना हमारी संस्कृति में सदा से रही है-

'ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।'

प्रधानमंत्री मोदी अपने आह्वान में बड़े संकल्प लेकर चलने की बात करते हैं। एक ऐसा बड़ा संकल्प, जो त्यागात्मक और निषेधात्मक न होकर क्रियात्मक है। ये संकल्प न केवल विकसित राष्ट्र का स्वप्न है, बल्कि ज्ञान और पूर्णता का एक ऐसा विधान हमारे सामने प्रस्तुत करता है, जो सामान्य सामाजिक दृष्टिकोण का स्वधर्म है। वेदांत के पंच कोष, जैन पंच महाव्रत, न्याय दर्शन की पंचावयवी युक्तियां और महर्षि अरविंद के पांच स्वप्न आज पुनर्स्मरणीय हैं। उसी प्रकार राष्ट्र के विकास के संदर्भ में अमृतकाल के पांच प्रण व्यापक महत्व के हैं।

लक्ष्य न हो आंखों से ओझल

हमारे पौराणिक ग्रंथों में कहा भी गया है कि जो आध्यात्मिक दृष्टि में स्वधर्म है वही व्यावहारिक और सामाजिक दृष्टि से स्वकर्म हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग और कर्मयोग की विस्तार से चर्चा है। आत्मसिद्धि के लिए कर्ममार्ग को ही प्रमुखता दी गई है। जब बड़े संकल्पों को लेकर चलने की बात हो रही हो तो गीता के इस दार्शनिक विवेचन के अनुसार कोई भी व्यक्ति पलभर के लिए भी निष्क्रिय नहीं रह सकता है। भारत को अगर विकसित राष्ट्र बनाना है तो पूरे देश को कर्ममार्ग पर चलते हुए इस लक्ष्य की प्राप्ति को अपने मानस पटल से ओझल नहीं होने देना होगा। जब पूरा राष्ट्र एकजुट होकर विकासशील से विकसित होने के संकल्प पथ पर आगे बढ़ेगा तो इस मानसिक संतुलन की बेहद आवश्यकता होगी।।

सशक्त हो रहा देश

हम सबने व्यक्तिगत व सेवा जीवन में समवेत एवं ऊर्जावान प्रयासों की सफलता के उदाहरण कई बार देखे हैं। सभ्यता के उदय से ही इतिहास के पृष्ठों को पलटते हुए हम भारत को एक सुसंस्कृत एवं समृद्ध राष्ट्र के रूप में देखते हैं तो आश्चर्य होता है कि ज्ञान विज्ञान, राजनैतिक व्यवस्थाओं, कला एवं तकनीक में यहां कितनी विविध दृष्टियां विकसित हुईं। जल मार्ग, थल मार्ग से यात्राओं द्वारा भारत ने अपना संदेश दूर तक भेजा एवं व्यापार में भी शक्तिशाली बना। आधुनिक नवाचार बिजली, रेलवे, व्यापक स्तर पर किए जाने वाले रासायनिक उत्पादन की औद्योगिक क्रांति ने भारत को भी प्रभावित किया। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में हर क्षेत्र से अद्भुत नेतृत्व प्राप्त हुआ। श्रेष्ठ वकील, चित्रकार, कवि, साहित्यकार राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत होकर इस संग्राम में जुड़े।

यह विषय विशेष महत्व का है कि 20वीं सदी के आरंभ में भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर के विज्ञानियों जैसे जगदीश चंद्र बोस, चंद्रशेखर वेंकट रमन, मेघनाद साहा, श्रीनिवास रामानुजम, सुब्रह्मण्यन् चंद्रशेखर इत्यादि का उदय देखा। राष्ट्र निर्माण में विज्ञान की भूमिका विशेष है और आज हम आधुनिक तकनीक के व्यापक प्रयोग को नव निर्माण के केंद्रीय घटक के रूप में देख सकते हैं। तकनीकी शक्ति रचनात्मक उत्पादन को संवर्धित करती है तथा प्रतियोगी बाजार में मानवीय क्षमता को लगातार बेहतर बनाती है। स्वतंत्रता के अनेक वर्षों बाद आज भारत अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर है और अकाल जैसे दुःस्वप्नों को विस्मृत कर पा रहा है। कोविड विभीषिका में भी जनसंचार, उत्पादन जैसे क्षेत्रों में आधुनिक तकनीक के प्रयोग ने हमें सुरक्षित रखा। सुरक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में शोध तकनीकी प्रगति से लाभान्वित हो रहा है। यही शोध सूचना, प्रौद्योगिकी एवं आधारभूत सेवाओं में भी आवश्यक है। इन सबका समुच्चय तभी साकार हो सकेगा, जब हम समवेत रूप से सभी क्षेत्रों के संकल्पों को एक साथ लेकर बड़े लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे।

विज्ञानियों ने किया सबल

पूर्व राष्ट्रपति स्व. डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का विश्वास था कि भारत मिसाइल तकनीक, जैव विविधता, कृषि-उत्पाद, माइक्रो इलेक्ट्रानिक्स जैसे सभी क्षेत्रों में विश्व की अगुवाई कर सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार तकनीकी नवाचार से सर्वसुलभ सेवा संवर्धन की चर्चा करते रहे हैं और व्यक्तिगत प्रयास से विज्ञानियों का मनोबल बढ़ाते रहे हैं। भारत में अधिक श्रेष्ठ एवं सुलभ विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा हो, इसके लिए अनेक संस्थान स्थापित किए जा रहे हैं। विश्व बाजार में निर्यात की अनेक संभावनाएं हैं जो पारंपरिक ज्ञान से लेकर आधुनिक तकनीक तक विस्तृत है। स्थानीय चिकित्सा पद्धतियों पर विज्ञानी शोध, सफल स्वास्थ्य सेवाएं, बेहतर मातृ-शिशु कल्याण, संभावित शिक्षा नीति यह सभी एक बड़े स्वप्न एवं राष्ट्र निर्माण के घटक हैं जिनके लिए वैधानिक व्यवस्थाएं, आयोग, पीठ आदि के प्रयास प्रचलित हैं। व्यवस्थाएं पारदर्शी एवं तकनीक से सुरक्षित हों तो अधिक प्रभावकारी होंगी। शोध, रचनात्मक नवाचार, प्रयोग का सामर्थ्य और जोखिम उठाने वाला नेतृत्व महत्वपूर्ण है। भारत का नैतिक और साहसी नेतृत्व वचनबद्ध है कि भारत को एक विराट शक्तिशाली राष्ट्र बनाएगा। परिष्कार व परिवर्तन के मंत्र के साथ हम सभी को प्रधानमंत्री के साथ प्रणबद्ध होना चाहिए।

कौशल को मिल रहे पंख

आज का भारत विकसित राष्ट्र के रूप में अपनी छवि बना रहा है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति अंतर्विभागीय शोध, भविष्योन्मुखता, समाज व समय के साथ उसके समन्वय एवं जनोन्मुखी होने पर बल दे रही है। कौशल विकास गहन अध्ययन एवं शोध दोनों ही ज्ञान में महत्वपूर्ण हैं। एक सशक्त राष्ट्र की संकल्पना एक सशक्त शैक्षणिक संरचना पर ही आधारित हो सकती है। असेवितों तक पहुंच और गुणवत्ता के जुड़वा उद्देश्यों को लेकर ही यह विकास संभव है। भारतीय जनतंत्र में हम सबका सामूहिक प्रयास व प्रतिबद्धता ही इस स्वप्न को पूर्ण करने में समर्थ होगी। अब पूरे देश को पांच प्रणों के प्रति वचनबद्ध होना पड़ेगा। इससे हमारी सोच वृहद्, उदार एवं समावेशी होगी और हमारे स्थानीय कर्म दायित्वबोध एवं श्रेष्ठता से भरे होंगे। वैसे ही जैसे भगवान बुद्ध की वैश्विक करुणा, महावीर की सभी में जीव की स्वीकृति भारतीय संस्कार है एवं उसकी आध्यात्मिक चेतना सर्वविदित है। महात्मा गांधी ने आदर्शवाद के समर्थन में कहा था कि जिस प्रकार गणित व ज्यामिति का विकास बिंदु व सरल रेखा की आदर्श संकल्पना के बिना संभव नहीं, वैसे ही नवनिर्माण आदर्श स्वप्न के बिना संभव नहीं। विराट की कल्पना के साथ निर्माण की प्रतिबद्धता का संकल्प ही सृजन एवं सफलता का मूल है।

(लेखक लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति हैं)

नवनिर्माण को निमंत्रण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भविष्योन्मुखी, उदार चिंतन के साथ आधुनिक तकनीक एवं नवाचार के सामंजस्य से सभी को सार्वजनिक सुलभ जीवन के प्रति प्रतिबद्ध किया है। हम सबको संकल्पित, प्रणबद्ध करते हुए हमारे सक्रिय योगदान का आह्वान कर रहे हैं। यह नवनिर्माण के यज्ञ मे हमारी आहुतियों का निमंत्रण है। महात्मा गांधी ने सेवा, तप, ज्ञान एवं यज्ञ के मूल्य को रेखांकित किया। विश्व के वहनीय विकास, पर्यावरण संरक्षण, अंतरराष्ट्रीय शांति सभी के लिए जिस विराट चिंतन की आवश्यकता है, वह भारत की संस्कृति मे विद्यमान है। प्रधानमंत्री का प्रथम प्रण इस विचार की ओर इंगित करता है कि हम सब कटिबद्ध होकर यदि विश्वास के साथ प्रयास करें तो हमारे मंगलकारी स्वप्न सत्य हो सकेंगे।